हिन्दी ज्ञान परंपरा और साहित्येतिहास लेखन

वेदमूर्ती सी आर

प्राध्यापक और मुख्यस्थ, हिन्दी विभाग, नॅशनल कॉलेजु, बसवनगुडी, बेंगलुरू.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15796057

ABSTRACT:

ज्ञान परंपराएँ धर्म के वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होकर इस विश्व को निरंतर परिपूर्णता का चमक देती है। उसका प्रभाव विश्व को प्रत्येक क्षेत्र में बाँटा है। हिन्दी ज्ञान परंपरा, साहित्य जगत का सूर्य है, जो विभिन्न रूपी किरणों से चमकते हुए सम्पूर्ण संसार को आलोकित करता है। ज्ञान परंपरा को प्रभावित करनेवाले इस हिन्दी सूर्य की ओर यदि दृष्टिपात किया जाए तो गद्य, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, एकाँकी, नाटक, और यात्रा साहित्य आदि रश्मियों के रूप में यह संसार की विभिन्न यथार्थ भावनाओं को समाज के समक्ष प्रकाशित करने में अग्रणी है। यह जनसामान्य को नवीन चेतना, जागरूकता, सजगता की ओर ले जाता है। इस विषय के किसी भी पक्ष पर दृष्टिपात करने से पूर्व ही यदि परंपरा शब्द की व्याख्या की जाये, तो परंपरा वह संपत्ति है जो बिना रुके निरंतर गति से अपने कर्म पथ की ओर अग्रसारित होती रहती है। यह परंपरा अपने अंदर समेटे हुए ज्ञान को चारों ओर आलोकित करते, व्याप्त दुख, वेदना को अपने अंदर समाहित करते हुए कल्पना और भाव से उसमें ऊर्जा भर उसे जनमानस तक पहुँचाती है और इस प्रकार सुखी मानव के हृदय में एक ऐसी जागृति प्रदान करती है जिससे दूर-दूर तक व्यक्ति एक दूसरे के साथ जुडकर सद्भावनाओं को अंगीकार करता है। यह परंपरा ज्ञानस्वरूप है, चेतना स्वरूप है, संस्कृति स्वरूप है, नैतिक गुण स्वरूप है। इसलिए यह परंपरा नित्य नवीन है और नई विचार से युक्त है। जो जीवन को नवीन आलोक देनेवाली होती है, नये मूल्यों से जोड़नेवाली होती है, नये ज्ञान का प्रतीक होती है। भारतीय सभ्यता ने ज्ञान को बहुत महत्व दिया है, जैसा कि इसके आश्चर्यजनक रूप से विशाल बौद्धिक ग्रंथों, दुनिया से पांडुलिपियों के सबसे बड़े संग्रह और विभिन्न प्रकार के ग्रंथों, विचारकों और विद्यालयों की अच्छी तरह से प्रलेखित विरासत से पता चलता है। भगवान श्री कृष्ण ने भगवद गीता (४,३३-३८) में अर्जुन को मार्गदर्शन दिया कि ज्ञान आत्म शुद्धि और मुक्ति का सबसे बड़ा साधन है। भारत में ज्ञान का एक लंबा इतिहास है जो गंगा नदी की तरह निरंतर जारी है। वेदों, उपनिषदों से लेकर श्री अरबिंदो तक, ज्ञान सभी शोधों का केंद्र बिंदु रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों की भारतीय संस्कृति, दर्शन और आध्यात्मिकता में एक मजबूत नींव है और यह हजारों वर्षों से विकसित हुई है।

KEYWORDS:

संस्कृति, गंगा, पाण्डुलिपि, वेद, उपनिषद, चिकित्सा, ऊर्जा, आयुर्वेद, महामारी, भारतीय, विज्ञान, ज्ञान, परम्परा, प्रणाली, दुनिया, परिवार.

आयुर्वेद, योग, वेदान्त और वैदिक विज्ञान सहित ये ज्ञान परंपरा आधुनिक दुनिया में आज भी उपयोगी है। आयुर्वेद मनुष्य के लिए ज्ञान चिकित्सा का सबसे पहला स्कूल है। चिकित्सा के जनक चरक २५००० साल पहले आयुर्वेद को अनुसंधान किया। आज आयुर्वेद तेजी से हमारी सभ्यता में अपना सर्वोच्च स्थान हासिल कर रहा है। आधुनिक युग में आयुर्वेद का उदाहरण हमने करोना महामारी में देखा। भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रणालियों ने। "वसुदैव कुटुंबकम"1 (दुनिया एक परिवार)

वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है,

"हम भारतीयों के बहुत ऋणी है, जिन्होंने हमें गिनना सिखाया।
बिना इसके कोई सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं हो सकती थी।"2

पाश्चात्य जगत के वैज्ञानिक के कथन से यह स्पष्ट होता है कि भारत वर्ष का योगदान सदैव ही अमूल्य है। आधुनिक संदर्भ में इसकी उपादेयता सदैव अक्षुण्ण रहेगी। बीज शब्द के बारे में कहें तो, ज्ञान शब्द का अर्थ है सच्चाई या ज्ञान का समझ। परंपरा का अर्थ है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जानेवाले ज्ञान का संस्कार।

हिन्दी ज्ञान प्रणाली आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबंधन, स्थिरता आदि जैसे मुद्दों के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भंडार प्रदान करती है जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। अब समय है भारत के द्वारा विश्व को दिए गए ज्ञान को सँजोकर इसका संवर्धन किया जाए और भारतवर्ष के जनता को संस्कृति, पहचान और ज्ञान से जोड़ा जाए। तब ही इसकी विकसित ज्ञान परंपरा का उपादेयता सिद्ध होगी। बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यावश्यक है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा को लिए बिना नहीं चल सकती है, क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिक के दौर की ओर तेजी से अग्रसर है। वहीं हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे है। इस अंधानुकरण में हमारी वही स्थिति हो चुकी है जैसा कि उपनिषद में कहा है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगा।

हिन्दी भाषा का इतिहास बहुत समृद्ध है, जिसका इतिहास मध्यकाल से ही चला आ रहा है। भारत में हिन्दी हमेशा से ही एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जो देश में गहरी जड़ों को दर्शाता है। हिन्दी एक भाषा नहीं है, यह भारत की समृद्ध परंपराओं, रीति-रिवाजों और विरासत की वाहक के रूप में कार्य करती है। भारत की समृद्ध संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ हिन्दी प्राथमिक भाषा है। यह बहस एक सेतु के रूप में कार्य करती है। जो भारत की विविध संस्कृतियों को एकजुट करती है और सामाजिक एकीकरण की भावना पैदा करती है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए हिन्दी को अपनाना और बढ़ावा देना आवश्यक है। यह विभिन्न भाषा समुदायों के बीच प्रभावी संचार भी सुनिश्चित करता है। हिन्दी ज्ञान परंपरा सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य का वह कल्पवृक्ष है, जिसका एक-एक पल नवीन कलाओं और भावनाओं से विभूषित हैं। महाकवि कबीरदासजी स्वयं ज्ञान को महत्व देते है। उनका मानना है कि, परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान और प्रेम के आधार पर ही हो सकती। वह कहते हैं कि,

"पोथी पढ़-पढ़ जुग भया, भया न पंडित कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होया।"3

हिन्दू और मुसलमान को परस्पर लड़ते-झगड़ते देखकर कबीर का कोमल हृदय दुखित हो जाता था। उनकी दृष्टि में दोनों ही समान थे, एक ही भगवान का अलग-अलग संतान थे। अपनी वाणी द्वारा कबीर ने द्वेष को दूर कर उन्हें एक दूसरे के समीप लाने का महान कार्य किया। जैसे,

"कोई हिन्दू कोई तुरक कहावै, एक जमीं पर रहिये।
कह हिन्दू मोही राम पियारा, तुरक कहे रहिमाना।
आपस में दोऊ लरि-लरि मूये, मरम न काहू जाना।"4

जाति-पाँति के कारण प्रत्येक जाति अपने को ऊँचा समझकर अभिमान में डूबी रहती थी। कबीर ने गुणों को प्रधान माना और जाति को तुच्छ। जैसे,

"जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।"5

हिन्दी साहित्येतिहास की परंपरा में सर्वोच्च स्थान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित 'हिन्दी का इतिहास' (१९२९) को प्राप्त है। यह सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था। तथा जिसे आगे परिवर्तित करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया। इस के आरंभ में ही आचार्य शुक्ल ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए उद्देश्य घोषित किया है।

"जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है,
तब वह निश्चित है कि, जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप
में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास'
कहलाता है।"6

रामधारी सिंह दिनकर ने हिन्दी की सांस्कृतिक परिधि पर विचार किया था। उन्होंने उस रोचक स्थिति का ध्यान दिलाया कि विद्यापति जितने हिन्दी, मैथिली के है, उतने हि बंगाल के। हिन्दी के पश्चिमी छोर पर स्थित मीरा के साथ भी यही स्थिति है। मीरा जितनी हिन्दी, राजस्थानी की है, उतनी ही गुजराती की। किसी बंगाली भाषी ने विद्यापति को हिन्दी कहना ठीक उसी तरह है, जिस तरह किसी गुजराती से मीरा का कहना। यह हिन्दी की समस्या नहीं, बल्कि ताकत है। जिसकी वजह से नवजागरणकाल के हिंदीतर भाषी लेखकों ने विचारों को राष्ट्र भाषा के रूप में देखने का स्वप्न देखा था। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन पर विचार करते हुए दुख देता है कि जिस भक्ति आंदोलन में हिन्दी का हृदय ही नहीं, भूगोल भी विस्तृत हुआ, वह हृदय और भूगोल दोनों रीतिकाल में सीमित हो गए। रीतिकाल में हिन्दी उत्तर प्रदेश के एक छोटे इलाके तक सीमित कर रह गई। साहित्य के समाजशास्त्र और इतिहास दृष्टि दोनों के लिए यह विचारणीय प्रश्न है। हिन्दी की साहित्यिक परिधि को विस्तार को भारत की सांस्कृतिक परिधि में जोड़ने की कोशिश में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना ने दो महत्वपूर्ण किताबें प्रकाशित की। हिन्दी ज्ञान परंपरा में निहित संत हिन्दी साहित्य अपने आप में अद्वितीय है। संत किसी के शत्रु नहीं होते बल्कि निष्काम होते है। ईश्वर लीन होते है। प्रेम के उपासक होते हैं। कबीरदास संत का गुणगान करते हुए कहते है,

"निरवैरी निहकमता, साँई सेती नह,
विषिया सू न्यारा रहे, संतही का अंग एह।"7

वास्तव में संतों का विशेषता के रूप में परिलक्षित होती है। संत तो मार्ग से भटके हुए व्यक्तियों को सत्य मार्ग पर लाने की क्षमता रखते हैं। इसलिए कबीरदास आगे कहते हैं,

"संत न छाड़े संतई, कोटिक मिले असंत।
चंदन भुजंग बैठिया, तउ सीतलता न तजंत।"8

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित संत साहित्य अपने आप में अद्भुत क्षमता

को धारण करने वाला है। हिन्दी साहित्य की ये परंपरा समाज को सदैव से नयी दिशा, आयाम देने में सक्षम रही है और आज भी जारी है।

हिन्दी साहित्य से मंडित ज्ञान परंपरा सनातन धर्म के वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होकर इस विश्व को निरंतर परिपूर्णता का आभास करती रही है। उसका प्रभाव विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त किए हुए है। ज्ञान परंपरा में हिन्दी साहित्य अपने अनुपम विशिष्ट उदाहरण रचना रहा है। आज भी हिन्दी साहित्य उद्भव से निकलने वाली ज्ञान निर्झरणी जन-जन के हृदय को पतित-पावन करने में सक्षम है। प्राचीन युग में साहित्य के इतिहास से संबंधित स्वतंत्र ग्रंथ लिखने की परंपरा भारत में नहीं अपितु पश्चिम में भी नहीं मिलती। फिर भी पूर्ववर्ती कवि एवं साहित्यकारों ने नामाल्लेख करते हुए उनकी भारतीय लेखकों में दृष्टगोचर होती है। जिससे साहित्य का इतिहास लिखने में सहायता प्राप्त होती है।

भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के नामों का उल्लेख किया है। हिन्दी में महाकवि तुलसी ने भी अपने से पहले राम गुणगान करनेवाले कवियों के नामों का उल्लेख किया है। रामचरितमानस में वह कहते है;

"वाल्मीकि नारद घट जोनी,
निज-निज मुखन कही निज होनी।"9

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित हिन्दी संत साहित्य अपने आप में अद्भुत क्षमता को धारण करने वाला है। हिन्दी साहित्य की ये परंपरा समाज को सदैव नई दिशा, आयाम देने में सक्षम रही है और आज भी रही है।

निष्कर्ष:

अंत में हम यह कह सकते है कि, हिन्दी ज्ञान परंपरा बहुत सालों से ज्ञान का मूल स्रोत रही है। जिसने विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं को हिन्दी के माध्यम से परिष्कृत और परिमार्जित किया है। लोगों के प्यारी भाषा हिन्दी ने अपनी सरलता, सरसता, सुगमता तथा सशक्तता से ज्ञान परंपराओं को साहित्यिक धरातल पर व्याप्त कर दिया है। साहित्येतिहास की बारे में जाने तो प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। तब वह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन आ सकते है। परंपरा को साहित्य के साथ सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में हिन्दी साहित्य, वह हीरकमणि है जिसमें समस्त भावनाएं समाहित है। उसमे भक्ति भी है। ज्ञान भी है। शिक्षा भी है और समाज सुधार भी। उसमें बाल मनोरंजन भी है और युवाओं का दिग्दर्शन भी है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य ज्ञान परंपरा का एक मुख्य और अतुलनीय स्रोत है।

Reference:

1. महोपनिषद्, अध्याय 4, श्लोक 71
2. When Einstein Met Tagore: How the Scientist Engaged With India
3. संपादन श्यामसुन्दरदास, कबीर ग्रंथावली, इंडियन प्रेस प्रयाग प्रकाशन नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला-33
4. वही ग्रन्थमाला-33
5. वही ग्रन्थमाला-33
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन 2013
7. संपादन श्यामसुन्दरदास, कबीर ग्रंथावली, इंडियन प्रेस प्रयाग प्रकाशन नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला-33
8. वही ग्रन्थमाला-33
9. बालमीक नारद घटजोनी - भारतकोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.